Volume 9 Issue 3 @ 2023 IJIRCT | ISSN: 2454-5988

कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2023

मुद्दे मतदान व्यवहार परिणाम एवं भविष्य की दिशा

डॉ. लक्ष्मीनारायण नागौरी

एस.बी.के.राजकीय महाविद्यालय, जैसलमेर

कर्नाटक विधानसभा 2023 के चुनाव परिणाम कई संदर्भ और अर्थो में अप्रत्याशित माने जा रहे है। कर्नाटक दक्षिण भारत का एक मात्र राज्य है। जहॉ भाजपा की प्रभावी राजनीतिक उपलब्धियां रही है। तीन प्रमुख राष्ट्रीय दल भाजपा कांग्रेस और आम आदमी पार्टी एवं JDS(जे.डी. एस.) जैसा क्षेत्रीय दल भी चुनाव मैदान में था।

विगत 5 विधानसभा चुनावो में मात्र दो बार किसी दल को 2009 और 2013 में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ था और विगत 38 वर्ष में हर 5 वर्ष में सरकार परिवर्तन वहां का राजनीतिक व्यवहार रहा है।

त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति में जे.डी.एस. किंग मेकर की बजाय स्वयं किंग बन गयी। एक बार कांग्रेस के सहयोग से और एक बार के सहयोग से भाजपा को कभी भी अपने बूते स्पष्ट बहुमत नहीं मिल पाया यह भी यथार्थ है। जबकि कांग्रेस ने अनेक बार स्पष्ट बहुमत से सरकार बनाई है।

कर्नाटक में जातीय आधार पर लिंगायत वोकालिंगा और कुरुबा वर्ग माने जाते है। मुस्लिम ,ओबीसी और दलित वर्ग की भी प्रभावी उपस्थिति है। लिंगायत निजलिंग्गपा के पश्चात कभी कांग्रेस के पास एक मुश्त नहीं रहे, रामकृष्ण हेगड़े के समय जनता पार्टी में तथा बाद में भाजपा येदुरप्पा के नेतृत्व में इन्हें अपने पक्ष में रखने में सफल रही है।

लेकिन इस बार सारे तिलस्म तार–तार होते नजर आये और कांग्रेस को प्रचंड बहुमत प्राप्त हुआ 137 स्थान पर कर्नाटक में कांग्रेस की यह जीत 1989 के बाद सबसे बड़ी जीत है। तब कांग्रेस को 178 सीट प्राप्त हुई थी।[1]

भाजपा को 64 और जे.डी.एस.को 20 स्थान प्राप्त हुए है।[2]

2. मुख्य मुद्देः– (Major issue) चुनाव रणनीति चुनाव मुद्दों समस्याओं आश्वासनों और भावी दिशा व कार्यक्रमों पर लड़े जाते रहे है। लोकतंत्र में जाति धर्म भावनात्मक मुद्दे भी अनेक बार निर्णायक सिद्ध होते है। इस बार का चुनाव कर्नाटक में मुख्यतः त्रिकोणात्मक माना जाता रहा है। सतारुढ़ भाजपा विपक्षी दल कांग्रेस और क्षेत्रीय दल जे.डी.एस. जबकि आम आदमी पार्टी तो मात्र औपचारिकता दर्ज करवा रही थी।

कांग्रेस ने रायपुर(छतीसगढ़) अधिवेशन के पश्चात स्थानीय स्तर पर और स्थानीय मुद्दों, नेताओं की सक्रियता और कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ाकर चुनाव लड़ने की रणनीति बनायी जो कारगर

साबित हुई। कांग्रेस और जे.डी.एस. इस बार अलग–अलग चुनाव लड़ रहे थे। कांग्रेस ने सीपी आई से गठबंधन किया था।

कांग्रेस के चुनावी मुद्देः–

चुनाव रणनीतिः– कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश की भांति इस चुनाव में भी स्थानीय मुद्दों पर चुनाव लड़ा। कांग्रेस नेता जयराम रमेश के अनुसार कांग्रेस ने जीवनयापन, खाद्य सुरक्षा, किसानों की समस्याओं, बिजली आपूर्ति, बेरोजगारी और भष्टाचार को चुनावी मुद्दा बनाया।

कांग्रेस ने नई चुनाव रणनीति बनाई। गांधी परिवार ने राष्ट्रीय मुद्दों के बजाय स्थानीय समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार को चुनाव के केन्द्र बिन्दु के रुप में सामने रखा।[3]

1 राष्ट्रीय मुद्दों से दूरी रखी प्रधानमंत्री मोदी, हिन्दुत्व पर प्रहार की बजाय स्थानीय समस्याओं पर चुनाव अभियान केन्द्रित किया।

40 प्रतिशत कमीशन वाली सरकार जातिगत जनगणना आरक्षण OPS(ओल्ड पेंशन स्कीम) जैसे मुद्दे जनता में ले गये। पेगेसस, अडानी और चीन सीमा विवाद जैसे मुद्दों से दूरी रखी।[4]

कांग्रेस की रणनीति में स्पष्ट सामने आया कि विगत 10 वर्षों में जब जब भी कांग्रेस ने राष्ट्रीय मुद्दों पर चुनाव लड़ा कांग्रेस परास्त हुई है। इस बार स्थानीय मुद्दों को आधार बनाना पुनः कारगर साबित हुआ है।

कांग्रेस ने मुख्य रुप से निम्नांकित बिन्दुओं को चुनाव प्रचार का आधार बनाया :–

1. **बेरोजगारी**
2. **मंहगाई**
3. **भष्टाचार :–** भष्टाचार से जनता चिंतित है लेकिन चुनावी मुद्दा नहीं बन पाया, चर्चा के बावजूद भी 12 राज्यों में भाजपा चुनाव जीती लेकिन इस बार 40 प्रतिशत कमीशन और PayTm के बजाय PayCm का स्लोगन काम कर गया।
4. **आरक्षणः–** मुस्लिम समुदाय का 4 प्रतिशत आरक्षण समाप्त कर भाजपा ने वोकालिंगा और लिंगायत में बांटने का निर्णय किया। कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणापत्र में आरक्षण का दायरा 75 प्रतिशत करने का वादा किया जिससे OBC, लिंगायत दलित भी कांग्रेस की तरफ जुड़ गये। मुस्लिम आरक्षण भी पुनः प्रारम्भ करने की बात कही। मुस्लिम मतदाता एक जुट हो गये।
5. **कांग्रेस की 5 गारंटी :–**[5] कांगेस ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में जनता की 5 गारंटी योजना जिसे संकल्प पत्र का नाम दिया गया है। गृहज्योति,गृहलक्ष्मी, अन्नभाग्य योजना, युवानिधि और शक्ति योजना के तहत सामाजिक सुरक्षा की 5 गारंटी को कांग्रेस ने संकल्प पत्र नाम दिया ।
   (4) राजस्थान पत्रिका 13 मई 2023 पृष्ठ –3
   (5) कांग्रेस चुनाव घोषणा पत्र (संकल्प पत्र) 2023
6. PFI पी.एफ.आई. और बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाया जायेगा। नफरत फैलाने वाले संगठनों पर प्रतिबंध लगाया जायेगा।
7. नई शिक्षा नीति समाप्त , राज्य शिक्षा नीति बनायी जायेगी ।

भाजपा के चुनावी मुद्दे एवं रणनीति :– भाजपा ने अपने चुनाव घोषणा पत्र को प्रजाध्वनि की उपमा दी।

1. मुस्लिम आरक्षण समाप्त करना।
2. विकास का मुद्दाः डबल इंजिन की सरकार बनाने की बात
3. बजरंग दल पर प्रतिबंध को हिन्दुत्व से जोड़ा
4. लोक लुभावनी घोषणाएंः वर्ष में 3 बार गैस सिलेण्डर , अटल आहार केन्द्र प्रत्येक वार्ड में, बी.पी.एल. कार्ड धारक को 1/2 लीटर (नंदिनी), दूध, दलित महिलाओं को 10 हजार की एफ.डी., 10 लाख गरीबों को घर, समान नागरिक संहिता, बीज के लिए 10 हजार रुपये की सहायता, गरीबों का वर्ष में एक बार मुफ्त स्वास्थ्य परीक्षण, 5 लाख ऋण ब्याज मुक्त देना, दलितों को 5 किग्रा. राशन मुफ्त ।

कांग्रेस ने स्थानीय नेतृत्व, स्थानीय मुद्दों और भ्रष्टाचार, युवाओं,महिलाओं और अल्पसंख्यकों पर विशेष ध्यान दिया। जबकि भाजपा ने हिन्दुत्व समान नागरिक संहिता और बी.पी.एल. परिवार,गरीब व युवाओं, महिलाओं पर विशेष ध्यान दिया है। भाजपा के मोदी,योगी,अमितशाह ने आक्रामक सघन प्रचार किया। यदुरप्पा ने भी प्रभावी भूमिका निभाई। विकास को केन्दीय भूमिका में रखा और हिन्दुत्व व डबल इंजिन की सरकार का आव्हान किया ।

चुनाव परिणाम एवं मतदान व्यवहार एवं एक नजर :–

मतदान व्यवहार :– इस चुनाव में 9.17 लाख नये युवा मतदाता है जो कि लोकतंत्र व राजनीति के स्टार्टअप कहे जा सकते है। बजरंग दल व पीएफआई की तुलना और प्रतिबंध की बात से चुनावी वातावरण गर्माया। कांगेस की तरफ से खड़गे द्वारा प्रधानमंत्री पर की गयी टिप्पणियों ने भी वातावरण को असहज बना दिया ।

इस बार रिकार्ड 73.19 प्रतिशत मतदान हुआ है।[6] परिणाम से लगता है कि शहरी क्षेत्र में भाजपा ने अच्छा प्रदर्शन किया है और ग्रामीण क्षेत्र में कांग्रेस का प्रभाव रहा है।

लिंगायत समुदाय दो फाड़ होता नजर आया है। और कांग्रेस का भी इस समुदाय में प्रभाव बढ़ा है। 1999 के बाद कांग्रेस ने अब तक का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है और 43 प्रतिशत मत तथा 137 स्थान प्राप्त किये है। जबकि भाजपा को पूर्व भांति 35.9 प्रतिशत मत प्राप्त हुए है। और 64 स्थान प्राप्त हुए जबकि 2018 में 36 प्रतिशत मत प्राप्त कर 104 स्थान प्राप्त किए थे। इस बार पिछले 4 विधानसभा चुनाव के बाद पहली बार किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ है। इन चुनावों में 24 वर्ष में पहली बार जे.डी.एस. का मतदाता कांग्रेस की तरफ खिसक गया जबकि 35 सीट के लगभग जे.डी.एस. को मिली। गठबंधन की सरकार बनती रही है। जे.डी.एस. का अपने गढ़ माण्डया और रामनगर में भी जनाधार खिसक रहा है।[7]

इन परिणामों के पश्चात जे.डी.एस. की कोई भूमिका सरकार निर्माण में नही रहेगी।

Voting Behaviour Table [8]

क्रं सं.	क्षेत्र	सीट	Congress	BJP	JDS	Other	टिप्पणी
1.	मुम्बई कर्नाटक	50	33	16	01	00	
2.	हैदराबाद कर्नाटक	40	26	10	03	01	
3.	मध्य कर्नाटक	23	14	07	01	01	
4.	तटीय कर्नाटक	19	06	12	01	-	
5.	पुराना मैसूर	64	44	04	14	02	
6.	बैंगलोर शहर	28	14	14	-	-	

उपरोक्त सारणी के आधार पर

1. कांग्रेस ने बीजेपी और जे.डी.एस. से 75 सीटे छीनी।
2. कर्नाटक 6 क्षेत्रों में से 4 कांग्रेस और 2 में भाजपा प्रथम स्थान पर है।
3. बाम्बे कर्नाटक, सैन्ट्रल कर्नाटक, तटीय कर्नाटक, हैदराबाद कर्नाटक में कांग्रेस को बढ़त प्राप्त हुई है। जे.डी.एस. को भारी पराजय का सामना करना पड़ा है।

भाजपा की पराजय और कांगेस को प्रचण्ड बहुमत क्यों ? मुख्य कारण एवं कारक :–

भाजपा की पराजयः प्रमुख कारण :–

भाजपा को अपने बूते कभी भी कर्नाटक में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही हुआ है।सतारुढ़ दल होते हुए भी भाजपा यह चुनाव भारी अन्तर से हारी है यद्यपि भाजपा का मत प्रतिशत पूर्व की भांति ही है। लेकिन पिछली बार की तुलना में सीटें 40 कम हुई हैं।

1. **भाजपा के पास प्रभावी स्थानीय नेतृत्व का अभाव :–** येदुरप्पा के राजनीति से सन्यास लेने के बाद भाजपा में उनके कद का कर्नाटक में कोई नेता नही रहा। बी.आर.बोम्बई की छवि (Rating) प्रभावी नही रही।
2. **भ्रष्टाचार के आरोप :–** ठेकेदार संतोष पाटिल ने आत्महत्या कर ली। अप्रेल 2022 में 40% कमीशन का विवाद जोर पकड़ता गया। कर्नाटक कांट्रेक्टर एशोसियन की शिकायत के बाद भी कोई ठोस कार्यवाही नही हुई। कांग्रेस एक विचार लोगों में बिठानें में सफलता पायी की यह 40% कमीशन की सरकार हैं केन्द्र की तुलना में राज्य सरकार की साख न्यूनतम स्थान पर पहुंच गयी। राज्य सरकार का काम काज का रिपोर्ट कार्ड भी अच्छा नही बन पाया। कांग्रेस ने Pay cm कैंम्पेन प्रारम्भ कर दिया। इसी ने सर्वाधिक छवी खराब कर दी । केवल केन्द्रीय नेतृत्व के भरोसे ही चुनाव नही जीते जा सकते। विधानसभा के चुनाव थे केन्द्र के नही। स्थानीय प्रभावी नेतृत्व नहीं होना नुकसान कर गया। भाजपा ने राष्ट्रीय मुद्दों को ज्यादा महत्व दिया जो कारगर नही बन पाया।

3. **पुरानी पेंशन योजना(ओ.पी.एस.) :–** पुरानी पेंशन योजना भी एक मुद्दा रहा है। हिमाचल के बाद कर्नाटक में भी इसने अपना प्रभाव सिद्ध कर दिया है। यह मुद्दा अब राज्य और केन्द्र की सीमाओं से बाहर निकल गया है।
4. **अल्पसंख्यक समुदाय का एक तरफा मतदान :–** मुस्लिम अल्पसंख्यक आरक्षण की बहाली के आश्वासन नें लगभग 13% मुस्लिम मतदाताओं ने कांगेस को मतदान किया।
5. बेरोजगारी व मंहगाई ने भी भाजपा से मतदाताओं का मोह भंग किया है।
6. **भाजपा नेतृत्व की आत्ममुग्धता एवं हठी व अंहकारी व्यवहार :–** देश के राजनीतिक परिदृश्य में मिल रही लगातार सफलताओं ने भाजपाई नेतृत्व को अंहकारी और आत्नमुग्ध बना दिया। पेट्रोल–डीजल खाद्यान की बढ़ती मंहगाई और ओ.पी.एस. की अनदेखी ने भाजपा को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आत्ममुग्धता ने भाजपा की यह स्थिति कर दी है।
7. **लिंगायत समुदाय को नाराज करना महंगा पड़ा:–** लिंगायतो ने भाजपा को और कुछ मात्रा में कांग्रेस की तरफ भी मतदान किया या तटस्थ हो गये। पार्टी को सबसे करारा झटका उन्हीं लिंगायत सीटों पर लगा है जो भाजपा की सबसे बड़ी शक्ति माने जाते रहे है। सेट्टार का कांग्रेस में जाना और येदुरप्पा को हटाना। पीढ़ी परिवर्तन के नाम पर येदुरप्पा को 78वर्ष की आयु में हटाना कारगर साबित नही हुआ। भाजपा का गुजरात मॉडल पर चुनाव लड़ना मंहगा पड़ा। भाजपा के 14 बागी कांग्रेस में जाकर चुनाव जीत गये। जगदीश सेट्टार और लक्ष्मण सारुदी जैसे प्रभावी नेताओं का टिकट कॉटना काफी महंगा पड़ा।[9]
8. **जे.डी.एस. के नुकशान ने भी भाजपा को हराने में भूमिका निभाई :–** जे.डी.एस. का वोटर कांग्रेस को चला गया। जे.डी.एस. का वोट शेयर 18% से घटकर 13% रह गया और कांग्रेस को वोट शेयर चला गया। कांग्रेस के वोट शेयर में 5% की बढ़त, भाजपा की यथास्थिति और जे.डी.एस.में गिरावट ने कांग्रेस की राह आसान बना दी है।
9. हिन्दुत्व व डबल ईंजन सरकार का नारा प्रभाव नही उत्पन्न नही कर पाया।[10]

<u>कांग्रेस की जीत :– कारण</u>

कांग्रेस की अद्भुत जीत के अनेक कारण रहे है जो इस प्रकार निरुपित किये जा सकते है–

1. कांग्रेस ने स्थानीय मुद्दों समस्याओं को आधार बनाकर चुनाव लड़ा और उनका सघन प्रचार –प्रसार किया। स्थानीय मुद्दों पर चुनाव लड़ना कांग्रेस के लिए हिमाचल के बाद एक बार पुनः रामबाण सिद्ध हुआ।
2. भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार,बेरोजगारी व महंगाई को केन्द्रीय मुद्दा बनाने में कांग्रेस काफी हद तक सफल हो गई और 40% की सरकार आम जनता को समझाने में सफल हो गयी ।
3. महिलाओं और युवा व मुस्लिम व इसाई अल्पसंख्यक वर्ग पर विशेष ध्यान केन्द्रित कर और उनको अपने पक्ष में करने में सफल रही ।
4. राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा:– राहुल गांधी और प्रियंका गांधी का सघन कर्नाटक दौरा व प्रचार भी कांग्रेस के पक्ष में गया। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में मार्ग में आने वाली एक भी सीट भाजपा जीत नही पाई और यहां तक की जे.डी.एस. के गढ़ में भी कांग्रेस छा गयी।[11]

5. स्थानीय नेतृत्व में समन्वय :– कांग्रेस स्थानीय नेतृत्व में समन्वय को प्रभावी ढंग से स्थापित कर पायी। सी.एम. के दोनों चेहरों को साथ लायी। डी.के. ने वोक्कालिंगा और सिद्धारमैया ने दलित वर्ग को साधने में भूमिका निभाई।
6. खड़गे का भूमिपुत्र का नारा :– जैसे मोदी ने गुजरात में माटीपुत्र का नारा दिया वैसे ही खड़गे का कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष होना व स्वयं को भूमिपुत्र बताना भी कांग्रेस के पक्ष में गया।
7. अल्पसंख्यक मत साधने में कांग्रेस सफल रही :– भाजपा ने 4% मुस्लिम कोटा खत्म कर दिया था। कांग्रेस ने फैसला बदलने का वादा किया। आरक्षण बहाली का आश्वासन दिया। हिजाब बैन करने वाले शिक्षा मंत्री बी.सी.नागेश चुनाव हार गये। जबकि इसके खिलाफ रैलियां निकालने वाली कांग्रेस की फातिमा चुनाव जीत गयी। इस प्रकार ध्रुवीकरण का दांव भाजपा के लिए उल्टा पड़ा।[12]
8. कांग्रेस संकल्प पत्र में 5 गारंटी दी गयी जो कि कांग्रेस के लिए संजीवनी बूटी का काम कर गयी क्योंकि यह गारंटी जैब और पेट पर सीधा असर डालती है।

चुनाव परिणाम भावी राजनीति के लिए क्या संदेश व दिशा दे रहे है महत्वपूर्ण विषय है:–

चुनाव में हार जीत सामान्य विषय है अटल बिहारी वाजपेयी और इन्द्रा गांधी जैसे व्यक्तित्व भी चुनाव में पराजित हुए है लेकिन यह चुनाव कुछ विशेष संदेश और संकेत क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति के लिए दे रहे है।

कांग्रेस के लिए संकेत :–

A. कांग्रेस पुनः राष्ट्रीय राजनीति में केन्दीय भूमिका में उभर रही है। इस बात से इनकार नही किया जा सकता। पंजाब जैसा राज्य गंवाने के बाद यह जीत कांग्रेस के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
B. खड़गे के नेतृत्व पर जनादेश की मोहर लग गयी है और राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने कांग्रेस का मनोबल, जनाधार और स्वयं राहुल गांधी की स्वीकार्यता भी बढ़ाई है। इसके बाद ही हिमाचल और कर्नाटक में कांग्रेस की प्रचण्ड विजय हुई है। विपक्षी एकता और गठबंधन में कांग्रेस पुनः प्रमुख भूमिका में दिखाई दे सकती है।
C. क्षेत्रीय दलों की सौदेबाजी और कांग्रेस के प्रति उपेक्षाभाव निश्चित रुप से समाप्त तो नही होगा लेकिन कम अवश्य होगा।
D. आने वाले विधानसभा चुनाव व लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नये उत्साह व प्रभावी भूमिका निभाती नजर आएगी।
E. कांग्रेस राष्ट्रीय राजनीति का एजेण्डा कुछ हद तक प्रभावित और स्थापित करने में सफल रहेगी। जैसे भाजपा ने हिन्दुत्व को एजेण्डा बनाकर अन्य दलों को भी हिन्दू मान्यताओं एवं आदर्शों को मानने के लिए विवश किया है वैसे ही ओ.पी.एस. मुद्दों को राष्ट्रीय एजेण्डा बनाने में कांग्रेस सफल होगी। अन्ततः भाजपा व अन्य राजनीतिक दलों को भी ओ.पी.एस. को मानने के लि विवश होना पड़ेगा।

भाजपा के लिए कर्नाटक दक्षिण का प्रवेश द्वार है दक्षिण भारत में राजनीतिक रुप से बी.जे. पी. साफ हो गयी है। नार्थ ईस्ट में बी.जे.पी. के तीन मुख्यमंत्री रह गये है और हिन्दुत्व की प्रयोगशाला में भाजपा की पराजय से भाजपा को भी अनेक संकेत प्राप्त होगें। आने वाले समय में प्रान्तीय विधानसभाओं और लोकसभा 2024 चुनाव में विजय प्राप्त करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है।

बढ़ती महंगाई,स्थानीय स्तर पर फैले भ्रष्टाचार के आरोप, बेरोजगारी जैसे मुद्दों का समाधान करना ही होगा। पेट्रोल व एलपीजी के दाम में कटौती करनी होगी।

क्षेत्रीय स्तर पर दूसरी पंक्ति के नेतृत्व को विकसित करना होगा। मजबूत क्षेत्रीय नेताओं को महत्वपूर्ण भूमिका देनी होगी। केवल राष्ट्रीय नेतृत्व के भरोसे हर चुनाव नही जीता जा सकता, 2018 में एनडीए व भाजपा 21राज्यो और 70 प्रतिशत आबादी पर शासन था, 2023 में 15 राज्य और 44 प्रतिशत आबादी पर ही सिमट गया है। ओपीएस जैसे मुद्दों को हल्के में लेना राजनीतिक आत्मघात होगा।

क्षेत्रीय दलों और एनडीए के साथी दलों के साथ पुनः नये सिरे से समन्वय की आवश्यकता भाजपा को महसूस होगी। पहले हिमाचल और अब कर्नाटक के नतीजों से भाजपा को अपनी रणनीति पर पुनः विचार करना होगा। छतीसगढ़, मध्यप्रदेश,राजस्थान,तेलंगााना और मिजोरम में इसी वर्ष दिसम्बर तक चुनाव है। राज्यों के नतीजे भाजपा के अनुरुप नही हुए तो उसका मनोवैज्ञाानिक असर लोकसभा चुनाव पर भी पड़ेगा।

निष्कर्ष में यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस समाप्त होती हुई पार्टी नही है भाजपा अजेय नही है। इन चुनावों ने क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति का पुरा खांका ही बदल दिया है। स्थानीय नेतृत्व का प्रभावी स्वरुप कुशल संगठन व समन्वय तथा अधिक मुद्दों, मुलभूत समस्याएं पुनः राजनीति की धारा तय करते प्रतीत होते है।

भाजपा और कांग्रेस दोनों को ही मित्रों की तलाश रहेगी। गठबंधन राजनीति का नया दौर प्रारम्भ हो सकता है और प्रतियोगी द्विध्रुवीय गठबंधन दल व्यवस्था का नया दौर प्रारम्भ होगा।

संदर्भ :—

1. दैनिक भास्कर 14 मई 2023
2. दैनिक भास्कर 14 मई 2023
3. इकोनामिक्स टाईम्स 9 मई 2023
4. राजस्थान पत्रिका 13 मई 2023 पृष्ठ—3
5. कांग्रेस चुनाव घोषणा पत्र (संकल्प पत्र)
6. राजस्थान पत्रिका 13 मई 2023
7. दैनिक भास्कर 13 मई 2023
8. दैनिक भास्कर 13 मई 2023
9. दैनिक भास्कर 14 मई 2023
10. दैनिक भास्कर 14 मई 2023
11. दैनिक भास्कर 14 मई 2023(नीरजसिंह की रिपोर्ट)
12. दैनिक भास्कर 14 मई 2023